डॉ. विजय मिश्र
हार्वर्ड विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित भौतिक विज्ञानी एवं संस्कृत विद्वान। कवि के तौर पर न्यू इंग्लैंड, दक्षिण एशिया के अनेक देशों में चर्चित एवं सफल यात्राएँ कीं। अनेक गरिमापूर्ण कवि सम्मेलनों में भागीदारी। विगत 18 बरसों से हार्वर्ड विश्वविद्यालय में सालाना भारतीय कविता पाठ का आयोजन कर रहे हैं।
सम्पर्क : 180, बेडफोर्ड रोड, Lincoln, MA, USA ईमेल : misra.bijoy@gmail.com

*व्याख्या*

वाल्मीकि रामायण : आधुनिक विमर्श-36

# लंकायुद्ध, सीता का उद्धार-5

## वानरसेना के प्रमुख अध्यक्ष और सेना की संख्या

हिंदी अनुवाद : मनीष श्रीवास्तव

ऐसा प्रतीत होता है कि रामायण के कथानक में वाल्मीकि द्वारा सुग्रीव के पात्र का चयन सहज नहीं अपितु रणनीतिक है। एक शिक्षक के रूप में वाल्मीकि वानरों के समूह को एक आततायी के विरोध में संगठित होते हुए दिखाना चाहते हैं। चूंकि राक्षसों ने उनके वनों का अतिक्रमण कर रखा था इसलिए वे रावण और उसकी सेना के विरोध में खड़े थे। उन्हें रोकने के लिए ही वानर रावण का विनाश चाहते थे। उन्होंने राम की सहायता से लंका पार करने के लिए सेतु का निर्माण किया। वाल्मीकि ये दर्शाने का प्रयास करते हैं कि जिस कार्य को पूरा करने के लिए वनचर तक संगठित हुए थे वहीं मनुष्यों में उसी कार्य के लिए आपसी विरोधाभास था।

शरण आगे बोला "वह ताम्बे की भाँति चमकती देह वाला विशाल वानर जिसके पीछे लाखों की वानर सेना खड़ी है, शक्तिशाली हर है। यहाँ इस ओर हैं भयानक आँखों वाले डरावने भालू जो ऊँचे पर्वतों और नदी घाटियों में बसते हैं और इनका नेतृत्व धूम्र कर रहा है। उसके पास ही उसका अनुज शक्तिशाली जाम्बवन है। जाम्बवन को इन्द्र का वरदान है। उस ओर वहाँ पर महान सेनानायक दंभ है। सभी वानर उसके आदेश की प्रतीक्षा में रहते हैं। वहाँ वो विशालकाय वृद्ध वानर जो पृथ्वी पर चार पैरों पर चलने वाले किसी भी जन्तु से सबसे बड़ा है, वानर जाति के पितामह संनादन हैं। ऐसा कहा जाता है कि किसी भी वस्तु को अपने हाथों में लेने के लिए वे अपनी भुजाएं मीलों तक फैला सकते हैं।"

वो उधर दूसरा सेनानायक क्रथन है, जो देवताओं के कुल का है। वह आपके भाई कुबेर की नगरी में हिमालय में रहता है। यह भी वानरों की सेना के साथ लंका का विनाश करना चाहता है। और वो तूफानों के वेग से आँधियाँ उड़ाता अपनी सेना के प्रमाथी चला रहा है। साथ ही काले मुँह वाले विशालकाय वानरों की सेना लिए गवाक्ष है। ये भी लंका को ध्वस्त करने के लिए उत्सुक है। स्वर्ण पर्वत से आने वाले विशेष वानर हैं जिनके दांत सिंहों के जैसे हैं और जो बाघ की भाँति क्रूर हैं। वे हाथियों की भाँति चिंघाड़ते चलते हैं, उनकी कमान सेनानायक सतावली के हाथों में है जिसके साथ गज,

गवाक्ष, गवय, नल एवं नील हैं। हर एक के पास अपनी विशिष्ठ शक्तियां हैं और प्रत्येक सेना प्रमुख असंख्य वानरों से घिरा हुआ है जो बड़ी से बड़ी चट्टानों को पल भर में धूमिल कर सकते हैं।

शरण के चुप होते ही शुक बोला "वहाँ वो उधर सारे वानर किष्किन्धा से आए हुए हैं जो कि सुग्रीव के कुल से हैं। दैवीय शक्तियों से युक्त ये वानर अपनी इच्छा के अनुरूप अपना आकार बदल सकते हैं। इस ओर सबसे शक्तिशाली मैंद और द्विविन्द हैं। ये लंका को ध्वस्त करने के लिए उतावले हो रहे हैं। उनके समीप ही महान वानर हनुमान हैं। ये दूसरी बार वापस आए हैं। हनुमान की गतिशीलता वायु वेग जैसी है। वे लंका का विनाश करना चाहते हैं। और उन्हीं से पास खड़े हैं इक्ष्वाकु कुल के राजकुमार राम, सबसे शक्तिशाली योद्धा। इन्हीं की पत्नी का आपने जनस्थान से अपहरण किया है!"

"वो दमकती कांति और चमकते नेत्रों वाला योद्धा जो राम के समीप खड़ा है उनका अनुज लक्ष्मण है जो अपने भाई की रक्षा में सदैव तत्पर है। वो अकेले ही पूरी राक्षस सेना का सर्वनाश कर सकता है। दूसरी ओर आपके अनुज विभीषण हैं। उन्हें लंका का उत्तराधिकारी घोषित कर दिया गया है और वे आपसे बदला लेने के लिए बिलकुल तैयार हैं। और फिर उधर हमें वे पर्वतनुमा वानर, वानरराज सुग्रीव दिखाई देते हैं। राम ने बाली के वध के बाद इन्हें ही किष्किन्धा नरेश बनाया है। मैं आपको वानरों की अनुमानित संख्या बताता हूँ। सौ लाख होते हैं कोटि, एक लाख कोटि शंख, एक लाख शंख महाशंख, एक लाख महाशंख वृन्द, एक लाख वृन्द महावृंद, एक लाख महावृंद पद्म, एक लाख पद्म महापद्म, एक लाख महापद्म खर्व, एक लाख खर्व होते हैं महा खर्व, एक लाख महाखर्व समुद्र, एक लाख समुद्र महासमुद्र, एक लाख महासमुद्र औघ, एक लाख औघ महाऔघ। वानरों की संख्या है एक कोटि महाऔघ। ये सारे वानर आपसे युद्ध करने को आतुर हैं। आपको अपनी विजय करने की तयारी आरम्भ कर देनी चाहिए!"

रावण के क्रोध की सीमा न रही, उसने दोनों को दरबार से बाहर निकाल देने का आदेश दिया और चीखते हुए बोला "धूर्त मूर्खों! क्या तुम्हें पता नहीं कि राजा से बात कैसे की जाती है? दरबारी कभी दुश्मन की प्रशंसा नहीं करते! तुरंत मेरी आँखों से दूर हो जाओ!" उसने दूसरे गुप्तचरों को पेश करने का आग्रह किया। उन्हें आदेश दिया- "जाओ, राम के बारे में और पता लगाओ। उसकी आदतों, उसकी दैनिक दिनचर्या पर ध्यान दो। देखो वह कब

वो दमकती कांति और चमकते नेत्रों वाला योद्धा जो राम के समीप खड़ा है उनका अनुज लक्ष्मण है जो अपने भाई की रक्षा में सदैव तत्पर है। वो अकेले ही पूरी राक्षस सेना का सर्वनाश कर सकता है। दूसरी ओर आपके अनुज विभीषण हैं। उन्हें लंका का उत्तराधिकारी घोषित कर दिया गया है और वे आपसे बदला लेने के लिए बिलकुल तैयार हैं।

सोता है और उसकी चाल क्या हो सकती है!" फिर उसने अपने आप को सांत्वना दी - "दुश्मन के आचरण को जानने से उसे आसानी से परास्त किया जा सकता है!"

कार्य सौंपे जाते ही नए गुप्तचर वानर सेना के पास चल पड़े। उन्हें विभीषण ने तत्काल पहचान लिया। वानरों ने उन्हें पकड़ लिया और प्रताड़ित किया। विभीषण ने उन्हें बचाया और राम के समक्ष प्रस्तुत किया। श्रीराम ने दया दिखाते हुए उन्हें मुक्त कर दिया। घायल अवस्था में वे लंका वापस आये और रावण से मिले। उनका मुखिया शार्दुल बोला "राजन! आप कृपया वानर सेना की गुप्तचरी के बारे में भूल जाएँ। शक्तिशाली जानवर हर जगह मौजूद हैं! राम और उनकी वानर सेना पहले से ही सुबेल पर्वत पर तैनात है। शिविरों में कोई भी प्रवेश नहीं कर सकता। कृपया सीता को वापस लौटा दें या अपनी रक्षा के लिए आत्मसमर्पण कर दें!" रावण ने जो कुछ भी अपने कानों से सुना वह उसे बिलकुल पसंद नहीं था। वह अपनी बहादुरी बघारने के जाल में स्वयं फंस गया था - "मैं कभी भी सीता को वापस नहीं दूंगा! चाहे जो हो जाए! आसमान भी फटता है तो फटने दो!" फिर शांतिपूर्वक बोला, "मुझे वानरवंश के बारे में ऐसे बताएं कि मैं उनकी शक्ति का अनुमान लगा सकूं!"

शार्दुल ने कहा - "सुदुर्जय महान रक्षराज का पुत्र है; जाम्बवन गरुड़ का एक और गुरुपुत्र है जिसने पहले भी कई राक्षसों का वध किया था; महान सुशेण धर्म-राज के पुत्र हैं;

सुंदर दधिमुख चंद्रमा के; सुमुख, दुर्मुख और वेगदर्शी स्वयं काल का स्वरूप हैं; नील अग्नि-देवता का पुत्र है; हनुमान पवनपुत्र हैं; अंगद इंद्र का पुत्र है; मेंद और द्विविंद अश्विन के पुत्र और गज, गवाक्ष, गवय, शरभ और गंधमादन सूर्य-देव के पुत्र हैं। इनकी संख्या दस करोड़ हैं, अजस्र गिना नहीं जा सकता! ये सभी पूरी तरह से राम के प्रति समर्पित हैं। राम के साथ उनके भाई लक्ष्मण और आपके अनुज विभीषण हैं!"

वानर सेना की बड़ी संख्या के जमावड़े को देखते हुए, रावण को छल की एक वैकल्पिक रणनीति बनानी थी। उसे यह श्राप था कि किसी भी विवाहित स्त्री को छूने से उसका शिर फट जायगा। स्वयं को पति के रूप में स्वीकार कराने के लिए वह सीता के समक्ष विभिन्न प्रयास कर रहा था। किन्तु सीता अपनी प्रतिक्रिया में दृढ़ थी कि वह राम की ही अर्धांग्नि है। "आप राम नहीं हैं!" यह एक पंक्ति का उसने उपयोग किया था। रावण के मन ने एक नई चाल को जन्म दिया। उसने शिल्प सामग्री का उपयोग करके राम का एक जीवंत सिर और उनके धनुष की प्रतिकृति बनाने के लिए कुशल राक्षस विद्युत्जिह्व को बुलाया। उस कुशल शिल्पकार ने बखूबी इस कार्य को अंजाम दिया।

उसके कार्य से संतुष्ट होकर रावण नकली कहानी सुनाने के लिए सीता के पास गया। "राम को प्रहस्त ने मार दिया जब वह एक यात्रा के बाद रात में आराम कर रहा था! वानर सेना को हमारी सेना ने नष्ट कर दिया। शेष वानरों को मेरे हाथियों और मेरे सेना नायकों द्वारा कुचल दिया गया है।" उसने विद्युत्जिह्व से आदेश दिया कि वह राम के सिर को सीता के सामने पृथ्वी पर रखें। "सीता स्वयं अपने पति की दुर्गति देखें!" धनुष को फेंकते हुए उसने कहा, "ये रहा तुम्हारे पति का धनुष। यह रात में प्रहस्त अपने साथ उठा लाया था!"

राम के माथे पर अपना टीका देख सीता दंग रह गईं। वह विलाप करने लगीं, उन्हें नियंत्रित करना असंभव हो गया। सीता विलाप करते हुए कैकेयी को कोसती जातीं - "हे कैकेयी, तुम्हें खुश होना चाहिए अब तुम्हारे कुल का शिर इस दुनिया में नहीं रहा!" सदमे और दु:ख के कारण मूर्छित हो वे पृथ्वी पर गिर पड़ीं। कुछ समय के पश्चात् होश आने पर पुनः विलाप करते हुईं बोलीं - "राम ने ऐसा क्या किया कि उनके साथ ऐसा हुआ? कितनी पापी हूँ मैं? अपने ही पति की मौत का कारण बन गयी! हे राम, आप तो मर्यादा पुरुषोत्तम हैं, आप वीरों के वीर हैं। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी आप संयम नहीं खोते! तो कोई आपको निद्रा में कैसे आहत कर सकता है? आपने तो कहा था कि जब मुझे आप अपने साथ स्वर्ग तक साथ लेकर जायेंगे? हे मेरे प्रभु, कृपया मुझसे बात करें!" रावण को देखते हुए वह चिल्लाई "हे रावण, अब मुझे भी मार दे और मेरे सिर को मेरे पति के पास रख दे। मुझे मेरे महान पति के साथ इस संसार से विदा लेने दे!"

रावण को लगा कि उसका छल काम कर गया है। वह एक आसानी से जीते जाने वाले युद्ध की तैयारी के लिए निकल गया। उसने सुहृदय सरमा को सीता के साथ रहने का आदेश दिया। शीघ्र अपने सेनापतियों की एक बैठक बुलाई और युद्ध की रणनीति बनाई गई। रावण ने आदेश दिया "दुन्दुभी निकालो और युद्ध का उद्घोष कर दो। सैनिकों को तैयार करो!" यह जानते हुए कि उन्हें राम से लड़ने में संशय हो सकता है, उन्हें ये आदेश दिया "सैनिकों को युद्ध के परिपेक्ष्य के बारे में पूर्णतः अनभिज्ञ रखा जाए!"

भाग्य असहाय लोगों की मदद करता है! सरमा सीता के प्रति सहानुभूति रखती थी। उसने सीता को रावण के छल और राम के नकली सिर के बारे में बताया। "राम सदैव खुद की रक्षा करने में सक्षम हैं! उन्हें कोई भी मार नहीं सकता। वे हमेशा सतर्क रहते हैं। राम तो स्वयं वानरों को संरक्षण देते हैं वे अपराजेय हैं! हे सीता, तुम्हारे लिए अच्छे दिन आने वाले हैं! शीघ्र ही आप अपने पति से मिल सकेंगीं! आप पूरी लंका नगरी में युद्ध का कोलाहल सुन सकतीं हैं! शीघ्र ही आप उस धरती की तरह आनंदित हो उठेंगीं जैसे वर्षा के बाद वह हरी भरी हो जाती है। आप विश्राम करें! मैं आपका संदेश राम तक गुप्त रूप से पहुंचा दूँगी!"

सीता अत्यंत प्रसन्न हईं और बोलीं- "किन्तु मेरी एक विनती है, मैं परस्पर इतने महीनों से भय में जी रहीं हूँ। मेरे मन की व्याकुलता बढ़ती जा रही है। क्या हम ये पता लगा सकते हैं कि रावण के परिवारजन मेरे भविष्य के बारे में क्या तैयारी कर रहे हैं?' सरमा जानकारी एकत्र करने हेतु महल में गयी। वापस लौटकर, उसने सीता से कहा, "मैंने रावण की मां को आपको रिहा करने की सलाह देते हुए सुना! लेकिन रावण ने किसी की एक न सुनी। आपकी रिहाई का एकमात्र रास्ता जो मुझे दिखता है वह है रावण का विनाश!"

लंका के पास आने वाले वानरों के भारी शोर से वार्ता बाधित हो गयी। रावण के सैनिकों पर आसन्न उदासी के बादल गहरा रहे थे। वे देख रहे थे कि कैसे उनका शासक कैसे उन्हें विनाश की ओर ले जा रहा था! ■